Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अमित वर्मा
रिसर्च स्कॉलर, यूजीसी नेट योग्यता

सारांश

दुनिया की कुल आबादी का लगभग आधा हिस्सा महिलाएं हैं, और यह माना जाता है कि किसी भी राष्ट्र की सामाजिक प्रगति का सबसे सटीक संकेत वहाँ की महिलाओं की स्थिति से मिलता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहां महिलाओं की भूमिका समाज की आधारशिला के रूप में स्थापित है। ग्रामीण जीवन में अधिकांश श्रम, उत्पादन और पारिवारिक उत्तरदायित्व महिलाओं द्वारा निभाए जाते हैं। देश में व्याप्त गरीबी की विकरालता का सबसे गहरा असर महिलाओं पर ही पड़ता है, और इस दुष्चक्र को तोड़ने का सबसे प्रभावशाली माध्यम शिक्षा है। 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन चुका है, जिसे शिक्षा के बिना पूर्ण नहीं किया जा सकता। यदि एक पुरुष शिक्षित होता है, तो वह स्वयं शिक्षित होता है, किंतु जब एक महिला शिक्षित होती है, तो वह दो परिवारों को शिक्षित करती है। हरियाणा राज्य की बात करें, तो यहाँ की महिलाएं न केवल सांस्कृतिक गरिमा की प्रतीक हैं, बल्कि राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। चूँकि देश की लगभग 50% जनसंख्या महिलाएं हैं, अतः उनके उत्थान, अधिकारों की जागरूकता और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय की प्राप्ति राष्ट्र की समग्र उन्नति के लिए नितांत आवश्यक है।

मूल शब्दः गुणवत्तापूर्ण स्त्री शिक्षा, अंतर्निहित क्षमताएं, आडम्बरी सोच सशक्त आत्मविश्वास, रूढ़िवादिता, मगरूर पुरुष, स्वावलम्बन आदि।

प्रस्तावना

किसी भी देश की वास्तविक प्रगति को मापने का सबसे सटीक पैमाना उस देश में महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन है। क्योंकि जब तक महिलाओं को उनके अधिकार और सम्मान नहीं मिलते, तब तक कोई भी समाज स्वयं को विकसित नहीं कह सकता। किसी भी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

सभ्य समाज का चरित्र उस समाज में महिलाओं की दशा और भूमिका से स्पष्ट झलकता है। महिलाओं को समुचित शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, और सामाजिक मान्यता प्रदान करके ही महिला सशक्तिकरण की दिशा में सार्थक कदम उठाया जा सकता है। शिक्षा, महिला सशक्तिकरण की मूल और प्रारंभिक सीढ़ी है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी यह समझ विकसित हो रही है कि शिक्षा वह साधन है जिससे महिलाएं समाज में आत्म–सम्मान और उपयोगिता का स्थान प्राप्त कर सकती हैं। गांव की सरल और परिश्रमी महिला को यदि शिक्षा मिले, तो वह अपने साथ होने वाले शोषण का प्रभावी रूप से प्रतिरोध कर सकती है। निर्णय लेने की क्षमता, जो किसी भी व्यक्ति के आत्मनिर्भर होने का संकेत है, महिलाओं को सामाजिक विकास की दिशा में सशक्त बनाती है, विशेषकर पहाड़ी और ग्रामीण क्षेत्रों में यह शक्ति और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

महिला सशक्तिकरण का मूल उद्देश्य महिलाओं को ऐसा सक्षम वातावरण प्रदान करना है, जहां वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने अधिकारों का उपयोग स्वतंत्र रूप से कर सकें। हरियाणा में विभिन्न सामाजिक आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रही है। स्वतंत्रता संग्राम हो या स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक सुधारों की दिशा में उठाए गए कदम, हरियाणवी महिलाओं ने हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। तुलसी देवी रावत, भक्ति देवी, भागुली देवी, कुन्ती वर्मा, जानकी देवी जैसी महिलाएं इसका सशक्त उदाहरण हैं। शराबबंदी आंदोलन में विनय लक्ष्मी सुमन, तारा देवी, गैणौ देवी और चिपको आंदोलन में भोटिया जनजाति की गौरा देवी ने भी प्रेरणादायक भूमिका निभाई। हरियाणा की महिलाएं आज विभिन्न दायित्वों को जागरूकता और कुशलता के साथ निभा रही हैं। वे शिक्षा, योग्यता और कार्यकुशलता के बल पर पुरुषों के समकक्ष खड़ी हैं। भले ही एक महिला के रूप में उनके सामने अनेक सामाजिक सीमाएं हों, फिर भी वे धैर्य, नम्रता, समायोजन और सहनशीलता जैसे गुणों में पुरुषों से कहीं आगे हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण अर्थव्यवस्था मूलतः प्रकृति आधारित है, जिसमें कृषि, पशुपालन, ईंधन, चारा–पत्ती जैसे कार्य शामिल हैं। इन कार्यों में महिलाओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों में पुरुषों का शहरों

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

की ओर प्रवास आम बात है, जिससे परिवार की समस्त जिम्मेदारियां महिलाओं के कंधों पर आ जाती हैं। ऐसे में महिला सशक्तिकरण न केवल सामाजिक न्याय की दिशा में एक कदम है, बल्कि आर्थिक और पारिवारिक सुदृढ़ता का भी आधार बनता है।''[1]

किसी भी राष्ट्र या समाज के समग्र और संतुलित विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि महिलाओं की भागीदारी राष्ट्र की मुख्यधारा में सुनिश्चित की जाए। जब तक देश की आधी आबादी पूरी तरह से सक्रिय और सहभागी नहीं होगी, तब तक समाज का सम्पूर्ण विकास संभव नहीं है। इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध अमेरिकी विचारक टॉकविल ने यह उल्लेखनीय बात कही है कि अमेरिकी लोकतंत्र की मजबूती और समृद्धि का मुख्य आधार वहाँ की महिलाओं की सक्रिय भूमिका और प्रमुखता रही है।''[2] पूर्व समय में महिलाओं को एक कमजोर इकाई मानते हुए उनका कार्यक्षेत्र केवल घर–गृहस्थी तक सीमित कर दिया गया था। हमारे समाज में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को गौण स्थान दिया जाता रहा, जिसके कारण उनकी भूमिकाएं भी सीमित रहीं। यह धारणा कि ष्महिलाओं का कार्य केवल घर संभालना है,ष लंबे समय तक समाज में बनी रही। लेकिन समय के साथ महिलाओं ने अपनी कार्यक्षमता, योग्यता और दृढ़ संकल्प से इस सोच को तोड़ दिया है। आज यह स्पष्ट हो चुका है कि परिवार और समाज के समग्र विकास के लिए महिला और पुरुष दोनों का आत्मनिर्भर होना और समान रूप से योगदान देना आवश्यक है।''[3]

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भागीदारी और आत्मनिर्भरता से है। सिंह के अनुसार, महिला सशक्तिकरण का अर्थ हैकृमहिलाओं को पुरुषों के समान वैधानिक, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में, परिवार, समुदाय, समाज और राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में, स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने का अधिकार और स्वायत्तता प्राप्त होना।''[4]

महिलाओं ने जब अवसर प्राप्त किए, तो उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता के आधार पर सक्रिय भागीदारी दिखानी शुरू की। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया और धीरे–धीरे आर्थिक क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसी प्रक्रिया

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

से महिला सशक्तिकरण का अध्याय प्रारंभ होता है। वर्ष 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाया गया, जिससे यह संकेत मिला कि वैश्विक स्तर पर भी महिलाओं के महत्व को स्वीकारा जा रहा है। 8 मार्च 1992 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन इसी दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम था। महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण के लिए अनेक संगठन स्थापित किए गए तथा विविध कानूनों की रचना की गई। अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष (1975), सार्क बालिका वर्ष (1990), और सार्क बालिका दशक (1991–2000) जैसे आयोजनों से यह स्पष्ट होता है कि विश्वभर में महिलाओं को समान अधिकार दिलाने के लिए व्यापक जागरूकता उत्पन्न हुई। भारत सरकार द्वारा गठित 'महिला स्थिति समिति' की रिपोर्ट 'समता की ओर' में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए, जैसेकृमहिलाओं के लिए नौकरियों में आयु सीमा और सेवा अवधि में रियायतें, कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावासों की व्यवस्था, राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना तथा बालिका समृद्धि योजना का कार्यान्वयन। इन सभी प्रयासों का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण को मजबूती प्रदान करना रहा है।''[5] महात्मा गांधी ने एक प्रेरणादायक विचार व्यक्त करते हुए कहा थाकृष्मैं तुम्हें एक मंत्र देता हूँ। जब कभी तुम्हें अपनी कार्यनीति को लेकर संदेह हो या स्वार्थ की भावना हावी होने लगे, तो तुम उस सबसे गरीब और दुर्बल व्यक्ति (विशेषकर महिला) का चेहरा याद करो जिसे तुमने देखा हो। फिर अपने आप से यह प्रश्न करो—क्या तुम्हारा यह कार्य उस व्यक्ति के किसी काम आएगा? क्या इससे उसके जीवन में कोई सुधार होगा? क्या इससे उसके भाग्य में कोई बदलाव संभव है? क्या यह कदम करोड़ों भूखे–प्यासे ग्रामीण लोगों को राहत दिलाने में सहायक होगा?" यदि तुम्हारा उत्तर 'हां' में हो, तो निस्संदेह तुम्हारा मार्ग सही है और संदेह तथा आत्मकेन्द्रितता दूर हो जाएगी।"[6] आज सबसे बड़ी आवश्यकता है कि महात्मा गांधी के विचारों को यथार्थ में परिणत किया जाए। ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण एक दीर्घकालिक और जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि यह केवल उनके अधिकारों का नहीं, बल्कि समाज में उनकी प्रतिष्ठा और भूमिका का प्रश्न भी है। इसके लिए सबसे पहले ग्रामीण समाज की मानसिकता में गहन परिवर्तन लाना अनिवार्य है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

वर्तमान में महिला सशक्तिकरण और शिक्षा दो ऐसे विषय हैं, जिन पर समाज के हर वर्ग की दृष्टि टिकी हुई है। हर कोई अपने–अपने तरीके से महिलाओं के हित में कुछ न कुछ योगदान देने की कोशिश कर रहा है। महिलाएं और उनकी समस्याएं जैसे सभी के ध्यान का केंद्र बन गई हैं। कोई उनकी शिक्षा को लेकर चिंतित है, तो कोई उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयासरत है। कोई उन्हें आत्मसम्मान का पाठ पढ़ा रहा है, तो कोई आरक्षण का कवच पहनाकर उन्हें संरक्षित करने की तैयारी कर रहा है।

इन सभी प्रयासों के बीच यह तथ्य भुला दिया गया कि भारत की महिलाएं न तो कभी शिक्षा से अछूती रही हैं और न ही वे कभी अपने अस्तित्व की चेतना से वंचित थीं। उन्होंने शिक्षा को जीवन का आवश्यक अंग माना और उसे अपने अनुभव से जिया भी। शिक्षा उनका जन्मसिद्ध अधिकार था और आत्मविश्वास उनके संस्कारों में रचा–बसा था। यह भारत और उसकी महिलाओं का दुर्भाग्य रहा कि समय के बदलावों और सामाजिक छल–कपट ने उन्हें एक ऐसे अंधकार में धकेल दिया जहाँ अशिक्षा को उन्होंने अपनी नियति मान लिया। धीरे–धीरे उनकी विवशता को ही उनकी पहचान बना दिया गया और आधुनिकता की सतही सोच ने उनकी शैक्षिक कमी को उनकी कमजोरी और अयोग्यता का प्रमाण मान लिया। यह भ्रांति फैल गई कि महिलाएं न तो जानती हैं, न समझती हैं और न कुछ कर सकती हैं। औरतों की बुद्धिमत्ता पर प्रश्न उठाते हुए यह कहावत आम हो गई—"औरत की अकल घुटनों में होती है।" यह धारणा न केवल उनकी क्षमताओं का अपमान है, बल्कि सामाजिक विकास की दिशा में एक बड़ी बाधा भी है। अतः अब समय आ गया है कि महिलाओं की योग्यता, विवेक और संघर्षशीलता को समझा जाए और उन्हें समाज की अग्रिम पंक्ति में सम्मानजनक स्थान प्रदान किया जाए।"[7] औरत को मानसिक रूप से तुच्छ समझने वाले शायद यह भूल बैठे कि वह प्रकृति की अनुपम कृति है, जिसके भाग्य के कोरे कागज पर स्वयं सृष्टिकर्ता ने ऐसी विलक्षण क्षमताएँ अंकित की हैं जिन्हें न तो हर कोई पढ़ सकता है और न ही समझ सकता है। उसकी विशेषताओं की झलक मात्र से ही अनेक बार लोगों की दृष्टि चकाचौंध हो जाती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

लेकिन इसी असाधारणता को अहंकारी पुरुष मानसिकता ने चुनौती के रूप में देखा। अपने अपराधबोध को छिपाने और वर्चस्व बनाए रखने के लिए उन्होंने औरत को घर की चारदीवारी में कैद कर दिया। वहीं दूसरी ओर, समाज के सामने दिखाने के लिए महिलाओं की भलाई के नाम पर सुविधाओं और अधिकारों की बात करने लगे, जिससे उनकी हेकड़ी दयालुता के मुखौटे में छिप जाए और वे स्वयं को महिलाओं के संरक्षक और हितैषी साबित कर सकें। अब यही प्रवृत्ति इस रूप में बदल गई है कि पुरुष वर्ग समय–समय पर महिला समस्याओं को उठाकर अपनी कर्तव्यपरायणता का दिखावा करने लगा है, जबकि वास्तविकता यह है कि यह सब उसके आधिपत्य को बनाए रखने का एक और प्रयास भर है।

निष्कर्षः–

समाज में धीरे–धीरे सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है और लोगों की मानसिकता में भी उल्लेखनीय बदलाव आया है। आज महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर न केवल आगे बढ़ रही हैं, बल्कि शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न उच्च पदों पर भी आसीन हो रही हैं। वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं। शिक्षा, महिला सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी और सर्वमान्य माध्यम है। अतः गुणवत्तापूर्ण स्त्री शिक्षा को हमें अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता और प्रतिबद्धता के रूप में स्वीकार करना चाहिए, जिससे महिलाएं अपनी अंतर्निहित क्षमताओं का पूर्ण उपयोग कर सकें। जब हम देश की आधी आबादी को सशक्त बनाएंगे, तभी राष्ट्र की समग्र प्रगति और स्थायित्व संभव होगा। यदि हम निकट भविष्य में "विकसित भारत" के स्वप्न को साकार करना चाहते हैं, तो हमें महिलाओं की प्रगति के मार्ग में उपस्थित हर प्रकार की बाधा को शीघ्रता से दूर करना होगा।

संदर्भ सूची :–

1 पचौरी जे0 पी0 व बाला किरन, वर्ष 17 अंक 1, जनवरी–जून, 2015 पृष्ठ सं0 5–9

2 विलियम मैथ्यू, "ग्रांड वूमेन एण्ड माइलेटीः द डेमोक्रेटिक फेमिली इन टॉकविल द रिव्यू पोलिटिकल साइंस विटर", द यूनिवर्सिटि ऑफ नोट्डे इण्डियाना, 1995

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

3 चतुर्वेदी अंजना, ''महिला स ाक्तिकरण एवं ग्रामीण विकास'', राधा कमल मुखर्जी, चिन्तन परम्परा वर्ष 15 अंक 2, जुलाई–दिसम्बर, 2013 पृष्ठ स ं0 39–41

4 सिंह, रंजनी रंजन, "सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में महिला स ाक्तिकरण की वास्तविकताऐं", परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, नई दिल्ली, वर्ष 14, अंक 1, 2007, पृष्ठ सं0 33

5 भाग्यलक्ष्मी, जे0 'महिला अधिकारिताः बहुत कुछ करना भोश', योजना, वर्ष 48, अंक 5, अगस्त 2004 पृष्ठ सं0 26

6 वही पृ0–27

7 पचौरी जे0 पी0 व बाला किरन, वर्ष 17 अंक 1, जनवरी–जून, 2015 पृष्ठ सं0 10